विषय-सूची

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
१ आदिनाथजी	१	१३ विमलनाथ	१६०
२ अजितनाथ	८६	१४ अनन्तनाथ	१६५
३ संभवनाथ	९५	१५ धर्मनाथ	१७०
४ अभिनंदन	१०१	१६ शान्तिनाथ	१७८
५ सुमतिनाथ	१०५	१७ कुन्थनाथ	१९१
६ पद्म प्रभु	११३	१८ अरनाथ	१९५
७ सुपार्श्वनाथ	११६	१९ मल्लिनाथ	२००
८ चंद्रप्रभु	१२५	२० मुनि सुव्रतनाथ	२०६
९ पुष्पदंत	१४०	२१ नमिनाथ	२११
१० शीतलनाथ	१४५	२२ नेमिनाथ	२१७
११ श्रेयांसनाथ	१५०	२३ पार्श्वनाथ	२३२
१२ वासुपूज्य	१५५	२४ भगवान महावीर	२४३

आवश्यकीय निवेदन

सज्जनो !

आज आपके समक्ष बहुत समयके बाद यह 'चौबीसी पुराण' उपस्थित करते हैं, यद्यपि यह बहुत पहले ही निकल जाता परन्तु प्रेसमें मशीन बदलनेके कारण ४ मासका अचानक विलम्ब हो गया, इसीलिये कार्तिकमें निकलने वाला ग्रन्थ चैत्रमें निकल रहा है।

पं० पन्नालालजी साहित्याचार्यने बहुत परिश्रम करके इस ग्रन्थका सम्पादन किया है, इसके लिये हम उक्त पंडितजीको हार्दिक धन्यवाद दिये बगैर नहीं रह सकते। विलम्बके कारण हमारे पंडितजीको सन्देह हो गया था कि निकलेगा या नहीं? परन्तु हम अपने ध्येयके पक्के हैं, जिसका निश्चय कर लेते हैं वह काम करते ही रहते हैं अतएव देरी होनेके कारण मैं पंडितजीसे पुनः प्रार्थी हूँ।

अभी तक हिन्दी जैन साहित्यमें चौबीसों तीर्थङ्करोंका जीवन चरित्र एक साथ मिलनेका अभाव था, उसकी पूर्तिके लिये मैंने पंडितजीसे दो वर्ष पहिले प्रार्थना की थी, उसको ध्यानमें रखकर पंडितजीने अटूट परिश्रम द्वारा सरल भाषामें जो यह ग्रन्थ लिख दिया है उसके लिये हम जैन समाजकी तरफसे आपका आभार मानते हैं, आशा है पंडितजी सा० भविष्यमें इसी तरह अपनी लेखनी द्वारा जैन साहित्यकी सेवा करते रहेंगे।

जिनवाणी सेवक—

दुलीचन्द परवार